रविवार 29 मार्च, 2020

*विषय — **वास्तविकता***

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 19 : 11

"कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" - ईसा मसीह

उत्तरदायी अध्ययन: **रोमियो 13: 1**
I इतिहास 29: 11, 12
भजन संहिता 145: 10–13

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की
ओर स न हो।
11 हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो
कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है।
12 धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम
तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।
10 हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी, और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे!
11 वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे, और तेरे पराक्रम के विषय में बातें करेंगे;
12 कि वे आदमियों पर तेरे पराक्रम के काम और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।
13 तेरा राज्य युग युग का और तेरी प्रभुता सब पीढ़ियों तक बनी रहेगी॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1 : 1, 3, 7 (*से* ,), 21 (*से 2nd* ,), 26 (*से* अधिराज्य), 27 (*से* ,), 31 (*से 1st* .)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।

3 तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया।
7 और भगवान ने आकाश बनाया।
21 इसलिये परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो।
26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, अधिकार रखें।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. यशायाह 43 : 10, 11, 13

10 यहोवा की वाणी है कि तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो, जिन्हें मैं ने इसलिये चुना है कि समझ कर मेरी प्रतीति करो और यह जान लो कि मैं वही हूं। मुझ से पहिले कोई ईश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा।
11 मैं ही यहोवा हूं और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं।
13 मैं ही ईश्वर हूं और भविष्य में भी मैं ही हूं; मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा; जब मैं काम करना चाहूं तब कौन मुझे रोक सकेगा॥

3. मत्ती 4 : 23

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।

4. मत्ती 9 : 1-8

1 फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया; और अपने नगर में आया।
2 और देखो, कई लोग एक झोले के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए; यीशु ने उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।
3 और देखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।
4 यीशु ने उन के मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?
5 सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर।
6 परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे हुए से कहा) उठ: अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
7 वह उठकर अपने घर चला गया।

8 लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है॥

5. मत्ती 21 : 23

23 वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था, कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है?

6. मत्ती 22 : 15, 29

15 तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उस को किस प्रकार बातों में फंसाएं।
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो।

7. यूहन्ना 14 : 10 (शब्द), 12 (*से 1st* ;)

10 ... ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा।

8. प्रेरितों के काम 3 : 1, 2, 4, 6-8, 11, 12

1 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।
2 और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जाने वालों से भीख मांगे।
4 पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी ओर देख।
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
7 और उस ने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पावों और टखनों में बल आ गया।
8 और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ मन्दिर में गया।
11 जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उन के पास दौड़े आए।

12 यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा; हे इस्त्राएलियों, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलना-फिरता कर दिया।

9. 2 पतरस 1 : 2, 3, 16

2 परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।
3 क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।
16 क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था वरन हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था।

10. इफिसियों 1 : 16 (*से* धन्यवाद), 17, 18 (*से* ;), 19, 21

16 … लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता।
17 कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश का आत्मा दे।
18 और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों ।
19 और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।
21 सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया।

11. इफिसियों 3 : 14, 15, 20 (वह), 21

14 मैं इसी कारण उस पिता के साम्हने घुटने टेकता हूं,
15 जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।
20 … जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है,
21 कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 478 : 26-27

केवल वही वास्तविक है जो ईश्वर को दर्शाता है।

2. 228 : 25 *केवल*

ईश्वर से अलग कोई शक्ति नहीं है।

3. 207 : 20-23

इसके एक कारण और भी हैं। इसलिए किसी अन्य कारण से कोई प्रभाव नहीं हो सकता है, और औकात में कोई वास्तविकता नहीं हो सकती है जो इस महान और एकमात्र कारण से आगे नहीं बढ़ती है।

4. 108 : 19-29

जब मृत्यु-घाटी की छाया में पहले से ही खड़े होकर, नश्वर अस्तित्व की सीमा के पास, मैंने दिव्य विज्ञान में इन सच्चाइयों को सीखा है: सभी वास्तविक अस्तित्व ईश्वर दिव्य मन, में हैं, और कि जीवन, सत्य और प्रेम सर्व-शक्तिशाली और सर्व-वर्तमान हैं; सत्य के विपरीत, - जिसे त्रुटि कहा जाता है, पाप, बीमारी, बीमारी, मृत्यु, सामग्री में मन की झूठी भौतिक भावना की झूठी गवाही है; यह असत्य भावना विकसित होती है, विश्वास में, नश्वर मन की एक व्यक्तिपरक स्थिति जो यह तथाकथित मन के नाम मायने रखती है, जिससे आत्मा की सच्ची भावना बंद हो जाती है।

5. 275 : 10-12

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है।

6. 515 : 28-8

दर्पण के सामने अब मनुष्य की तुलना अपने ईश्वरीय सिद्धांत, ईश्वर से करें। दर्पण को दिव्य साइंस कहें, और मनुष्य को प्रतिबिंब कहें। फिर क्राइस्टियन साइंस के अनुसार, ध्यान दें कि इसके मूल का प्रतिबिंब कितना सही है। जैसे दर्पण में स्वयं का प्रतिबिंब दिखाई देता है, वैसे ही आप आध्यात्मिक होने के कारण भगवान के प्रतिबिंब हैं। पदार्थ, जीवन, बुद्धि, सत्य और प्रेम, जो देवता का निर्माण करते हैं, उनकी रचना से परिलक्षित होते हैं; और जब

हम विज्ञान के तथ्यों के प्रति कॉर्पोरल इंद्रियों की झूठी गवाही देते हैं, तो हम इस वास्तविक समानता और प्रतिबिंब को हर जगह देखेंगे।

7. 52: 23-28 (से;)

ईश्वर की सर्वोच्च सांसारिक प्रतिनिधि, ईश्वरीय शक्ति को प्रतिबिंबित करने की मानवीय क्षमता की बात करते हुए, केवल अपने युग के लिए नहीं, बल्कि सभी युगों के लिए, अपने शिष्यों से कहा। "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा;"

8. xi : 9-14

क्रिश्चियन साइंस के फिजिकल हीलिंग अब परिणाम है, यीशु के समय के अनुसार, ईश्वरीय सिद्धांत के संचालन से, इससे पहले कि पाप और बीमारी मानवीय चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और स्वाभाविक रूप से गायब हो जाते हैं और आवश्यक रूप से अंधेरा प्रकाश और पाप को सुधार के लिए जगह देता है।

9. 418 : 12-15, 28-32

यह आपको स्पष्ट होना चाहिए कि बीमारी पाप होने की वास्तविकता नहीं है। बीमारी, पाप और मृत्यु के इस नश्वर सपने को क्रायश्चियन साइंस के माध्यम से समाप्त होना चाहिए।

हर प्रकार की त्रुटि के लिए सत्य बोलें। ट्यूमर, अल्सर, ट्यूबरकल्स, सूजन, दर्द, विकृत जोड़ों, स्वप्न-छाया को जागृत कर रहे हैं, नश्वर विचारों की काली छवियां, जो सत्य के प्रकाश से पहले भाग जाती हैं।

10. 192 : 32-14

मुझे लिन में मिस्टर क्लार्क से मिलने के लिए बुलाया गया था, जो छह महीने तक कूल्हे की बीमारी के साथ अपने बिस्तर तक ही सीमित थे, जो कि एक लकड़ी के बड़े स्पाइक पर गिरने से हुआ था, जब वह एक लड़का था। घर में प्रवेश करने पर मैं उनके चिकित्सक से मिला, जिन्होंने कहा कि मरीज मर रहा था। चिकित्सक ने कूल्हे पर अल्सर की जांच की थी, और कहा कि हड्डी कई इंच तक फैली हुई थी। उन्होंने मुझे जांच भी दिखाई, जिसमें हड्डी की इस स्थिति के प्रमाण थे। तब डॉक्टर बाहर गए। मिस्टर क्लार्क अपनी आँखों के साथ स्थिर और दृष्टिहीन थे। मौत का ओस उसके माथे पर था। मैं उसके बिस्तर के पास चला गया। कुछ ही पलों में उसका चेहरा बदल गया; इसकी मृत्यु-पालक ने एक प्राकृतिक रंग को जगह दी। पलकें धीरे से बंद हो गईं और साँस लेना स्वाभाविक हो

गया; वह सो रहा था। लगभग दस मिनट में उसने आँखें खोलीं और कहा: "मैं एक नए आदमी की तरह महसूस कर रहा हूं। मेरी पीड़ा पूरी तरह से दूर हो गई है।"

11. 193 : 17-19, 20-21

मैंने उसे उठने, खुद कपड़े पहनने और अपने परिवार के साथ खाना खाने के लिए कहा। उसने ठीक वैसा ही किया। अगले दिन मैंने उसे आंगन में देखा। ... घाव से रिसाव बंद हो गया, और घाव ठीक हो गया।

12. 243 : 32-6

भगवान जितना अच्छा है और सभी का स्रोत है, वह नैतिक या शारीरिक विकृति उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन इस तरह की विकृति वास्तविक नहीं है, लेकिन भ्रम है, त्रुटि का मतिभ्रम। दिव्य विज्ञान इन भव्य तथ्यों का खुलासा करता है। किसी भी रूप में कभी भी डरने या न मानने की गलती से, उनके आधार पर यीशु ने जीवन का प्रदर्शन किया।

13. 177 : 19-24

लेकिन एक झूठ, सत्य के विपरीत, उन गुणों और प्रभावों का नाम नहीं दे सकता है, जिन्हें सामग्री कहा जाता है, और मांस के तथाकथित कानून बनाते हैं, और न ही झूठ भगवान, आत्मा और सत्य के खिलाफ किसी भी दिशा में शक्ति का महत्व रख सकते हैं।

14. 454 : 11-13

उस बुराई या मामले में न तो बुद्धिमत्ता है और न ही शक्ति, यह पूर्ण क्रिएचरियन विज्ञान का सिद्धांत है, और यह महान सत्य है जो त्रुटि से सभी भेस को अलग करता है।

15. 421: 15-18 (*से 2nd*.)

उस महान तथ्य पर जोर देते हैं, जो इस पूरी नींव को कवर करता है, कि ईश्वर, आत्मा, सब कुछ है, और यह कि उसके जैसा कोई नहीं है। कोई बीमारी नहीं है।

16. 130 : 26-7

यदि ईश्वर या सत्य के वर्चस्व के लिए विज्ञान के मजबूत दावे पर विचार किया गया है, और अच्छाई के वर्चस्व पर संदेह किया गया है, क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि, दुष्टतापूर्ण, बुराई के जोरदार दावों पर चकित होना और उन पर संदेह करना, और अब उसे त्यागने के लिए पाप और अप्राकृतिक प्रेम करना स्वाभाविक नहीं लगता, - अब बुराई की कभी भी कल्पना करना अच्छा नहीं है और वर्तमान अच्छा है? सत्य को त्रुटि के रूप में इतना आश्चर्यजनक और अप्राकृतिक नहीं होना चाहिए, और त्रुटि को सत्य के रूप में वास्तविक नहीं होना चाहिए। स्वास्थ्य के रूप में बीमारी इतनी वास्तविक नहीं लगनी चाहिए। विज्ञान में कोई त्रुटि नहीं है, और हमारे जीवन को सभी के दैवीय सिद्धांत भगवान के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए वास्तविकता से शासित होना चाहिए।

जब एक बार वे दिव्य विज्ञान द्वारा नष्ट हो जाते हैं, तो कॉर्पोरल इंद्रियों के गायब होने से पहले झूठे सबूत गायब हो जाते हैं।

17. 76 : 18-21

दुख, पाप, मरते विश्वास असत्य हैं। जब दैवीय विज्ञान को सार्वभौमिक रूप से समझा जाता है, तो उनके पास मनुष्य पर कोई शक्ति नहीं होगी, क्योंकि मनुष्य अमर है और दिव्य अधिकार से जीवित है।

18. 472 : 24 (सब)-26

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6